स्वच्छता के संग,
स्वस्थ जीवन में उमंग

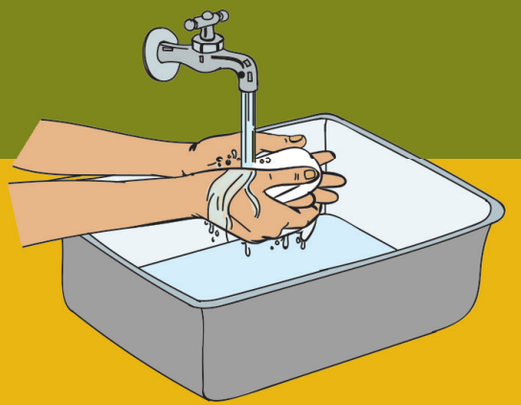

water for people
INDIA

ONE DROP

1

पानी का सुरक्षित भण्डारण एवं रख-रखाव

मनोहर के छोटे से परिवार में कुल तीन लोग रहते हैं। मनोहर, उसकी पत्नी कमली और बेटा बल्लू। मनोहर का गांव में कई बिगहा जर जमीन है और खेती में काफी आमदनी होने के बावजूद भी उसके घर में हमेशा ही पैसों की तंगी लगी रहती है, क्योंकि मनोहर की सारी आमदनी बीमार परिवार के दवाई के खर्चे में ही चली जाती है। जब देखो तब कोई न कोई अस्पताल में ही मिलता है। एक दिन मनोहर जैसे ही अपने बीमार बेटे को साइकिल पर बैठा कर अस्पताल की ओर जा रहा होता है, वैसे ही बल्लू के स्कूल के टीचर जी वहां आ जाते हैं....

मनोहर – राम, राम सर।

टीचर जी – राम राम मनोहर, अच्छा हुआ जो तुम रास्ते में ही मिल गए, मैं तुम्हारे घर ही आ रहा था।

मनोहर – हमरे घर, कउनो खास बात है क्या सर?

टीचर जी – हां भई बात तो ज़रा खास ही है, बल्लू के बारे में थोड़ा बातचीत करनी थी।

मनोहर – बल्लू के बारे में? (*अपने बेटे को डांटते हुए*) का रे स्कूल में कुछ गलती–वलती कर दिया का?

टीचर जी – अरे भई इसे डांटते क्यों हों, क्या पता इसमें इसकी गलती ही न हो।

मनोहर – अच्छा, ऐसी कौन सी बात हो गई? चलिए मैं अस्पताल से आकर बात करता हूं।

चर्चा के बिन्दु

- मनोहर क्यों परेशान था?

मुख्य संदेश

- परिवार के स्वस्थ रहने से पैसों की बचत होती है।

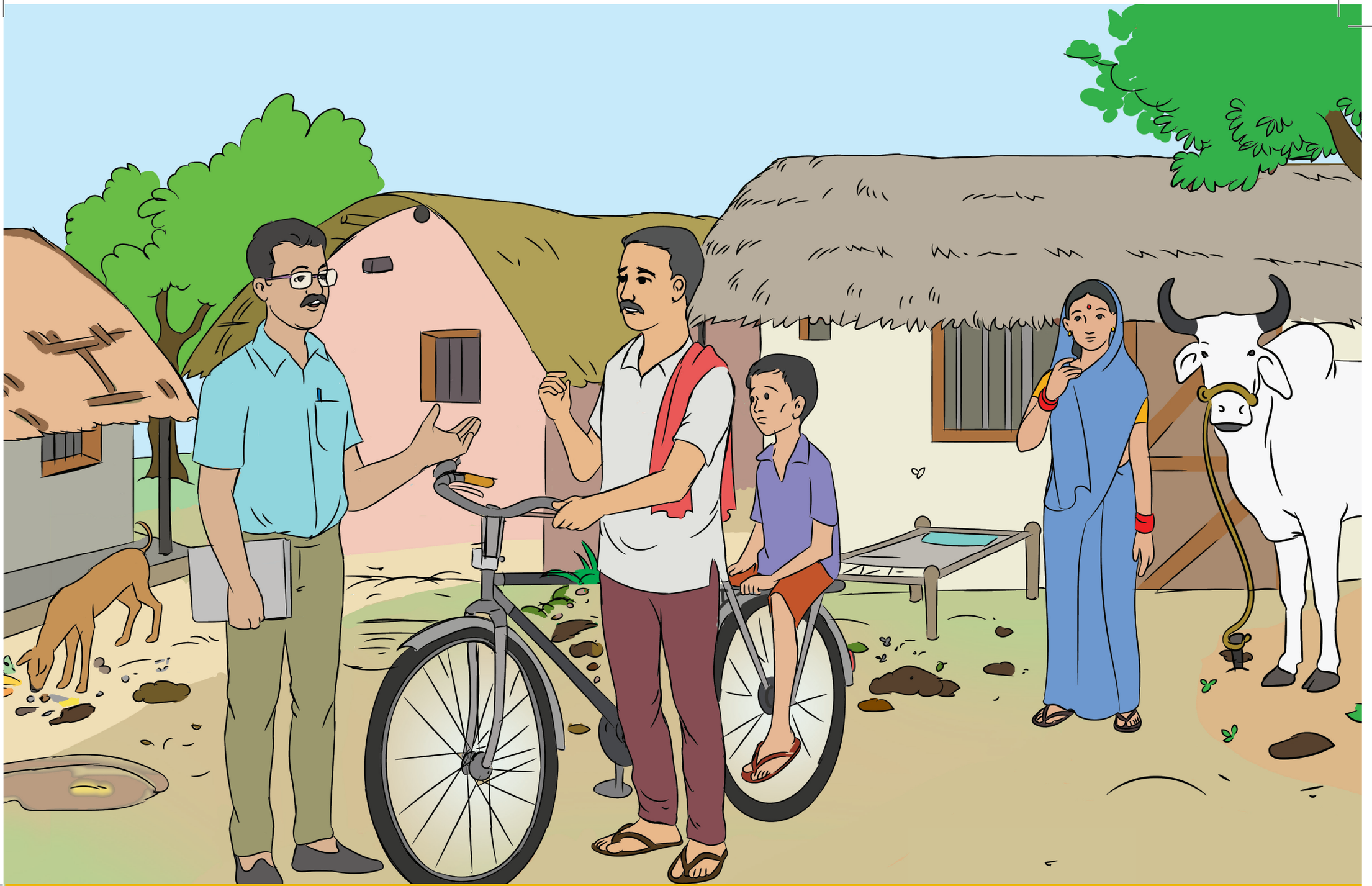

मनोहर अस्पताल से वापस आकर टीचर जी के साथ घर में बैठकर बात करता हुआ।

टीचर जी – मनोहर, बल्लू स्कूल में बहुत नागा करता है, वह हर रोज़ स्कूल नहीं आता और तो और कक्षा में भी पढ़ाई में सबसे कमजोर होता जा रहा है।

मनोहर – अब क्या बताएं सर, इसमें बल्लू को कउनो दोष नहीं, न सब दोष तो! (*मनोहर बोलते–बोलते रुक जाता है*)

टीचर जी – क्या हुआ चुप क्यों हो गए?

मनोहर – क्या बताएं सर, बल्लू चाहता तो है स्कूल जाना, लेकिन बीमारी इसका पीछा ही नहीं छोड़ रही। देखिए ज़रा दिन पर दिन दुबला होता जा रहा है। पता नहीं इसको का हो गया है। अभी बोल रहा था पेट दर्द कर रहा इसलिए इसे लेकर अस्पताल ही जा रहा था।

टीचर जी – ऐसा क्या हो गया इसको?

मनोहर – सर, केवल इसको ही नहीं, हमारे परिवार को ही किसी की नज़र लग गई है। घर में कोई न कोई बीमार ही रहता है। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा का हो गया है?

ये बोलकर मनोहर उदास हो जाता है।

चर्चा के बिन्दु

- क्या बीमार होने का कारण किसी की नज़र लगना माना जा सकता है?
- बीमार होने पर क्या करना चाहिए?

मुख्य संदेश

- साफ–सफाई का ध्यान रखने से बीमारियों से बचा जा सकता है।

टीचर जी मनोहर से बात कर रहे हैं और कुछ दूरी पर कमली घड़े से पानी निकाल रही है।

टीचर जी – (*अचानक से*) क्या बल्लू को हमेशा पेट की समस्या लगी रहती है, उसे दस्त या डायरिया होता रहता है?

मनोहर – (*चौंकते हुए*) अरे सर, जो बात हकीम मियां भी नहीं बता पाएं, उ बात आपको कैसे पता चल गया। हां, हां सर आप तो सही पकड़े हैं, पेट की बीमारी से पूरा परिवार ही परेशान है।

टीचर जी – अरे इस बीमारी को जानने के लिए हकीम मियां की नहीं, बल्कि सही जानकारी की जरुरत है।

मनोहर – सही जानकारी!

टीचर जी – हां भई सही जानकारी। मेरे पास एक मंत्र है, जिससे बल्लू के साथ–साथ तुम्हारा परिवार पेट की बीमारी से दूर हो जाएगा।

मनोहर की पत्नी (कमली) बीच में टीचर जी को पानी लाकर देती हुई।

कमली – ऐसा क्या मंतर है सर?

मनोहर – आप पढ़ाई–लिखाई के अलावा मंतर भी जानते हैं, इ तो हमें पता ही नहीं था।

टीचर जी – अरे भई स्वच्छ पानी है ऐसा मंतर, जो दूर करे बीमारी हर घर के अंदर।

कमली – का? स्वच्छ पानी, हम कुछ समझे नहीं!

टीचर जी – तुम भी बैठो कमली, मैं तुम सबको समझाता हूं, स्वच्छ पानी का मंतर!

चर्चा के बिन्दु

- क्या साफ पानी का उपयोग न करने से कोई बीमार पड़ सकता है?
- पानी को स्वच्छ रखना क्यों जरूरी होता है?

मुख्य संदेश

- हमें सदैव साफ और स्वच्छ पानी ही पीना चाहिए।
- स्वच्छ पानी पीने से दस्त या डायरिया जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है।

टीचर जी मनोहर के परिवार वालों को स्वच्छ पानी के बारे में समझाते हुए।

टीचर जी – मनोहर, कमली को मैंने अभी देखा, वह घड़े में अपना हाथ डुबाकर पानी निकाल रही थी, तभी मुझे तुम्हारे परिवार के बीमार होने का कारण समझ में आ गया।

कमली – पर इस बात का पेट की बीमारी से क्या लेना–देना?

टीचर जी – बीमारी का लेना–देना है कमली, क्योंकि साफ दिखने वाले हाथों में दस्त तथा अन्य बीमारियां फैलाने वाले कीटाणु हो सकते हैं इसलिए पानी में हाथ डुबाने से ये पानी में मिल जाते हैं, जिसे पीने से हम बीमार पड़ जाते हैं, तभी तो हमेशा पानी को ढककर रखना चाहिए और बर्तन से पानी निकालने के लिए हमेशा टिसनी या डंडी वाले गिलास का इस्तेमाल करना चाहिए, ताकि पीने के पानी को साफ रखा जा सके।

मनोहर – (*चौंकते हुए*) अरे बाप रे बाप, हम तो इ सब बात को सोचे ही नहीं कि बीमारी का इ भी कारण हो सकता है।

टीचर जी – मनोहर लाल इसके अलावा एक बात और अपने दिमाग में बिठा लो।

मनोहर – उ का सर?

टीचर जी – पानी भरने और रखने के लिए ढक्कन वाले बाल्टी का उपयोग करना चाहिए, चापाकल से घर तक पानी लाते समय पानी को ढककर लाना चाहिए एवं पानी रखने वाले बर्तन को नियमित रुप से साफ करना चाहिए। ये सब बात ध्यान रखोगे तभी बीमारी से दूर रहोगे।

मनोहर – हमममम समझ गए, आप कुछ देर बैठिए, हम इ सब पानी गिराकर पास के चापाकल से दूसरा साफ पानी भरकर लाते हैं।

मनोहर घर के अंदर पानी के बर्तन लाने चला जाता है।

चर्चा के बिन्दु

- टिसनी या डंडी वाले गिलास से पानी को निकालना क्यों जरूरी समझा जाता है?
- पानी को स्वच्छ कैसे रखा जा सकता है?

मुख्य संदेश

- साफ दिखने वाले हाथों में भी दस्त तथा अन्य जानलेवा बीमारियां फैलाने वाले कीटाणु हो सकते हैं।
- पानी निकालते समय हाथ या नाखून पानी में न डुबाएं, इसके लिए टिसनी या डंडे वाले गिलास का इस्तेमाल करें।

जैसे ही मनोहर बाल्टी उठाकर पानी भरने जाता है, टीचर जी उसे रोकते हैं।

टीचर जी – मनोहर ज़रा रुको तो! तुम लोग किस पानी का इस्तेमाल करते हो?

कमली – सर, उ पास में जो चापाकल है हम सब तो उसी का पानी पीते हैं।

टीचर जी – (*चौंकते हुए*) उस चापाकल का पानी? वहां तो बहुत ही गंदगी रहती है और उस चापाकल की गहराई भी बहुत कम है और शौचालय भी तो नज़दीक में बना हुआ है।

मनोहर – पर सर उसका पानी तो साफ दिखता है।

टीचर जी – मनोहर, साफ दिखने वाला पानी भी सेहत के लिए खतरनाक हो सकता है, इसलिए हमेशा पीने और खाना बनाने के लिए गहरे चापाकल या सुरक्षित नल का पानी इस्तेमाल करना जरुरी है। चापाकल के चारों ओर साफ–सफाई और पक्का चबूतरा होना चाहिए। चापाकल से शौचालय की टंकी की दूरी कम से कम 33 फीट होनी चाहिए और चापाकल का अतिरिक्त पानी सोख्ता गड्ढा में डालना चाहिए। ये सब जरुरी बातें ही स्वच्छ पानी बनाने में सहायक होती हैं।

कमली – अच्छा जी, इ सब बात तो हमें पता ही नहीं था। तभी सोचे, हम सब काहे बीमार पड़ रहे हैं। अब हम सब समझ गए, अब दूर ही क्यों न जाना पड़े, साफ चापाकल से ही पानी लाएंगे।

मनोहर – सर, आज आपने ये सब बात बता कर मेरे सिर से बीमारी का बोझ हल्का कर दिया। अब हम आपके द्वारा बताई गई सभी बातों का ध्यान रखेंगे और स्वच्छ पानी ही पिएंगे।

कमली – आज और अभी से हम सब साफ पानी पिएंगे और सब स्वस्थ रहेंगे।

टीचर जी – (*बल्लू की ओर इशारा करते हुए*) बल्लू बेटा स्वस्थ बनों और जल्दी से स्कूल चलो।

सभी एक साथ हंसते हैं।

चर्चा के बिन्दु

- क्या चापाकल के पास गंदगी होने से पानी भी गंदा हो जाता है?
- पानी को स्वच्छ बनाने के लिए कौन–सी जरूरी बातों का ध्यान रखना चाहिए?

मुख्य संदेश

- पीने के लिए गहरे चापाकल या सुरक्षित नल का पानी ही इस्तेमाल करें।
- चापाकल के चारों ओर साफ–सफाई रखें और पक्का चबूतरा बनाएं।
- शौचालय से चापाकल की दूरी 33 फिट होनी चाहिए।
- चापाकल का अतिरिक्त पानी सोख्ता गड्ढा में डालना चाहिए।

2

शौचालय का नियमित उपयोग

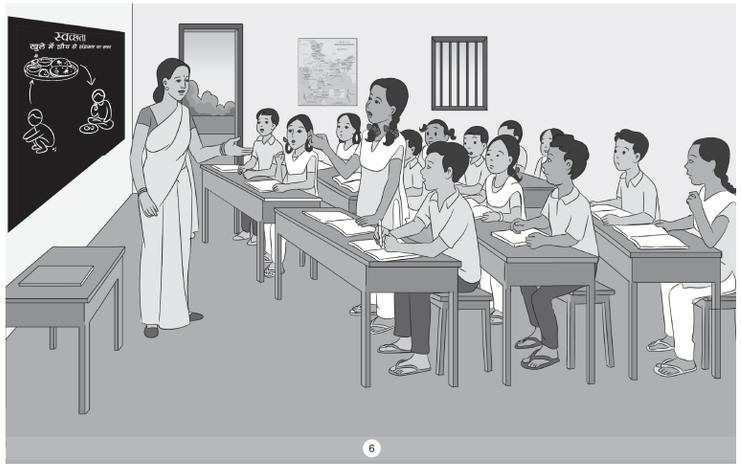

इस तरह बल्लू साफ और स्वच्छ पानी का इस्तेमाल कर बीमारी से ठीक हो जाता है। अब वह हर रोज स्कूल भी जाता है। बल्लू की एक चचेरी बहन भी है कोमल। कोमल और बल्लू एक ही स्कूल एवं एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। एक दिन टीचर जी कक्षा में सभी बच्चों को शौचालय के इस्तेमाल के बारे में जानकारी देती है और उनसे सवाल–जवाब भी करती हैं, ताकि सभी शौचालय का इस्तेमाल करें। वे सभी बच्चों को खुले में शौच करने के नुकसान को बताते हुए समझाती हैं कि.....

टीचर जी – बच्चों आप सबको पता है, खुले में शौच करने से हमें कई सारी बीमारियों का खतरा रहता है, इसलिए हमें शौच के लिए शौचालय का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

कोमल – पर मैम, बीमारी का शौचालय के इस्तेमाल से क्या लेना–देना?

टीचर जी – लेना–देना है कोमल, क्या तुम्हारे घर पर शौचालय का इस्तेमाल नहीं होता?

कोमल – जी, मेरे घर में शौचालय तो है लेकिन मेरे बाबू जी उसका इस्तेमाल नहीं करने देते। वे कहते हैं इसमें दम घुटता है और शौचालय में बेवजह पानी की बर्बादी होती है और जिससे टंकी जल्दी भर जाती है।

टीचर जी – कोमल, सभी के लिए इस बात को जानना बहुत ही जरुरी है कि बच्चे और बड़ों के पैखाने में कई तरह की बीमारी फैलाने वाले कीटाणु रहते हैं, इसलिए खुले में पैखाना करने से उसमें मौजूदा कीटाणु मिट्टी और पानी में मिल जाते हैं एवं हवा में फैलकर कई तरीकों से हमारे मुंह तक पहुंच जाते हैं, जिससे बीमारी फैलती है।

कोमल – मैम ये तो बहुत अच्छी जानकारी है। अब ये बात मैं अपने बाबूजी को बताऊंगी और उनसे भी शौचालय का इस्तेमाल करने के लिए कहूंगी।

चर्चा के बिन्दु

- शौच के लिए शौचालय का ही इस्तेमाल क्यों करना चाहिए?
- किस तरह से पैखाने से कीटाणु हमारे मुंह में चले जाते हैं?

मुख्य संदेश

- बच्चों और बड़ों के पैखाने में कई तरह की बीमारी फैलाने वाले कीटाणु रहते हैं।
- बीमारियों से बचने के लिए हर बार शौच के लिए शौचालय का ही उपयोग करें।
- बच्चों का मल इधर–उधर न फेंकें, इसे भी शौचालय में ही डालें।

स्वच्छता
खुले में शौच से संक्रमण का सफर
INDIA

कोमल के दिमाग में टीचर जी की बातें बैठ जाती हैं और वह अपने बाबूजी को समझाने का फैसला कर लेती है। पर कैसे? कोमल जानती है कि उसके बाबूजी शौचालय के इस्तेमाल की बात नहीं सुनेंगे, इसलिए इस बात को उनके सामने रखने के लिए एक उपाय सोचती है और शौच के लिए लेकर जाने वाले लोटे को छुपा देती है, जिसे सुबह के वक्त बाबूजी ढूंढ़ने लगते हैं...

बाबूजी – अरे कोमल की मां सुनती हो, लोटा कहीं देखा है क्या?

कोमल की मां – अरे उधरे होगा, कहां चला जाएगा। दू गो लोटा है, दोनों वहीं होगा।

बाबूजी – खोज तो रहे हैं, पर यहां है ही नहीं, कहीं कोई लेकर तो नहीं चला गया?

कोमल की मां – उ आपका लोटा सोना का थोड़ी न है, जिसे कोई चुराकर करोड़पति हो जाएगा। खोजिए उधर ही पड़ा होगा कहीं।

बाबूजी – (*कोमल से पूछते हुए*) अरे कोमल तूमने देखा है क्या कहीं लोटा?

कोमल – नहीं बाबूजी हमने तो कहीं नहीं देखा, सुबह तक तो उधर ही पड़ा था।

बाबूजी – (*गुस्से से*) अरे तो कहां चला गया फिर!

बाबूजी और कोमल की मां दोनों लोटा खोजने लगते हैं, तभी वहां इसी बीच में बल्लू आ पहुंचता है।

चर्चा के बिन्दु

- कोमल ने बाबूजी से शौच के बारे में बात करने के लिए क्या उपाय सोचा?
- बाबूजी क्यों परेशान हो रहे थे?

मुख्य संदेश

- परिवार के सभी सदस्यों को शौचालय का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

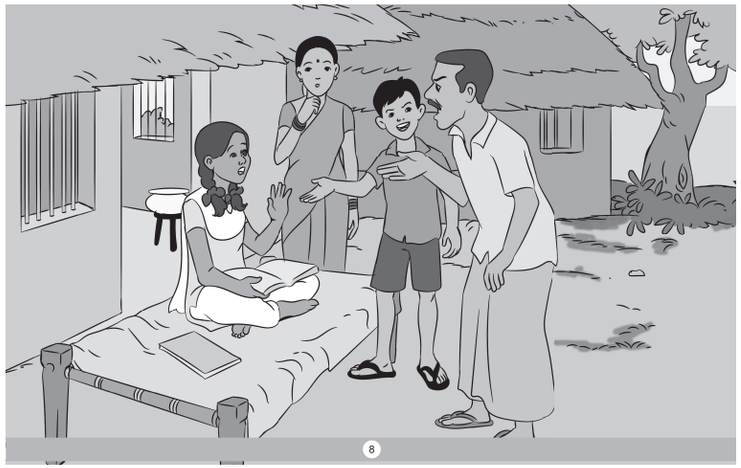

बल्लू – क्या हुआ चाचा जी, लोटा खोज रहे हैं क्या, हमें पता है यह छुपाने का काम किसका हो सकता है।

बाबूजी – अच्छा, ये हरकत कौन कर सकता है, तुम बस नाम बताओ, मैं उसकी अभी खबर लेता हूं।

बल्लू – यह काम जरुर कोमल का है, उसी ने छुपाया होगा।

कोमल की मां – कोमल, बल्लू ठीक बोल रहा है क्या, तुम बोलती काहे नहीं?

कोमल – हां दरअसल मैंने ही छुपाया है, मुझे आपसे शौचालय के इस्तेमाल के बारे में कुछ बात करनी है, जिसके बारे में आज मैम ने भी हमें कक्षा में बताया है।

बाबूजी – तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। शौचालय का इस्तेमाल हम रात–बिरात या बीमारी या कोउनो परेशानी के समय करते तो हैं, हर समय शौचालय का इस्तेमाल ठीक बात थोड़ी न है।

कोमल – पर बाबूजी, मैम बता रही थीं कि हमें कई तरह की बीमारियों से बचने के लिए हर बार शौचालय का उपयोग करना चाहिए। यहां तक कि बच्चों का मल भी शौचालय में ही फेंकना चाहिए।

बाबूजी – तुम्हारी मैम बोली और तुमने इहां हमरा लोटा छुपा दिया। तुम्हारा दिमाग तो ठीक है?

बल्लू – हां चाचा, कोमल बिल्कुल ठीक कह रही है। बड़ों और बच्चों के पैखाने में कई तरह की बीमारी फैलाने वाले कीटाणु रहते हैं, इसलिए खुले में पैखाना करने से उसमें मौजूदा कीटाणु मिट्टी एवं पानी में मिल जाते हैं तथा हवा में फैलकर कई तरीकों से हमारे मुंह तक पहुंच जाते हैं। क्या आप चाहते हैं कि हम सब बीमार पड़ जाएं?

बल्लू की बात को सुन बाबूजी सोच में पड़ जाते हैं।

चर्चा के बिन्दु

- शौचालय के इस्तेमाल से क्या फायदा होता है?
- बच्चों का मल शौचालय में ही क्यों फेंकना चाहिए?

मुख्य संदेश

- बड़ों और बच्चों के पैखाने में कई तरह की बीमारी फैलाने वाले कीटाणु रहते हैं।
- खुले में पैखाना करने से उसमें मौजूदा कीटाणु मिट्टी और पानी में मिल जाते हैं।

बातों–बातों में कोमल रोते–रोते अपने बाबूजी से बात करने लगती है।

कोमल – बाबूजी, ये सब नहीं तो कम से कम मेरी और मां के मान–सम्मान के बारे में तो सोचिए। आपको पता है कल जब मैं रात के समय शौच के लिए गई थी तो कुछ गांव के लड़के मेरे ऊपर टॉर्च की रोशनी मार रहे थे और खड़े होकर देख भी रहे थे। मुझे नहीं जाना खेत में।

कोमल की मां – हां जी, कोमल बिल्कुल ठीक कह रही है। अब हम कहां बच बचाकर जाएं शौच के लिए।

बाबूजी – तुम ठीक कहती हो कोमल की मां, मुझे तो इस बात का ख्याल ही नहीं आया, आज से कभी भी हम खुले में शौच के लिए नहीं जाएंगे।

बल्लू – तो चाचा जी इसी बात पर लोटा फेंक देता हूं, क्योंकि न रहेगा लोटा, न जाएंगे खुले में शौच।

कोमल – (*मुस्कुराते हुए अपने बाबूजी को धन्यवाद करती हुई*) धन्यवाद बाबूजी, आपने हमारी बात मान ली।

बाबूजी – मानता क्यों नहीं बिटिया, ये तो हर पिता का कर्तव्य है, अपने परिवार को बीमारी से दूर रखना और परिवार को लाज शरम से ढकना।

इस तरह से कोमल और बल्लू के घरवाले शौच के लिए हमेशा शौचालय का इस्तेमाल करने लगते हैं।

चर्चा के बिन्दु

- कोमल बाबूजी के सामने क्यों रोने लगती है?
- खुले में शौच करने से महिलाओं को किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है?

मुख्य संदेश

- शौच के इस्तेमाल से परिवार की महिलाएं सुरक्षित रहती हैं।
- शौचालय के इस्तेमाल से परिवार बीमारियों से बचा रहता है।

कोमल के घरवाले शौचालय का इस्तेमाल कर रहे हैं या नहीं, इस बात को देखने के लिए टीचर जी एक दिन कोमल और बल्लू के घर आ पहुंचती हैं। वहां पहुंचकर घरवालों से टीचर जी दोनों की खूब वाह-वाही करती है। टीचर जी बताती हैं कि बल्लू अब पढ़ने में काफी समझदार हो गया है और अब वह स्कूल भी हर रोज आने लगा है। यह सब सुन उन दोनों के घरवाले बहुत खुश होते हैं। इतने में बल्लू और कोमल बाहर से खेल कर आ जाते हैं।

कोमल – नमस्ते मैम! आप कब आईं?

टीचर जी – नमस्ते, नमस्ते! मैं तो कब से बैठी हुई हूं। बस पूछने आ गई कि तुम्हारे घर में शौचालय का इस्तेमाल शुरु हुआ या नहीं।

कोमल – हां मैम, शौचालय के इस्तेमाल के बारे में मैंने मां और बाबूजी को भी बताया।

कोमल की मां – मैम, हम अब शौच के लिए हमेशा शौचालय में ही जाते हैं। कोमल ने आपके द्वारा बताए गए सभी बातों को हमें भी बताया, तब हमें पता चला शौचालय के महत्व के बारे में।

बल्लू की मां – हां, कुछ दिन पहले सर भी हमारे घर आए थे, उन्हीं की बदौलत बल्लू की बीमारी ठीक हो पाई है। उन्होंने ही हमें स्वच्छ पानी से जुड़ी सभी जानकारी दी। अब तो हम पानी की स्वच्छता का पूरा ध्यान रखते हैं, जिससे हमारा परिवार बीमारियों से दूर रह सके।

टीचर जी – हमममम शाबाश, ऐसे ही हमें स्वच्छता का हमेशा ध्यान रखना चाहिए, इन्हीं सब से हमारे जीवन की आधी से ज्यादा परेशानी दूर हो सकती है।

इन्हीं सब बातों–बातों में अचानक से एक बच्चे की आवाज आती है.....

चर्चा के बिन्दु

- शौचालय के इस्तेमाल के बाद बल्लू के जीवन में क्या परिवर्तन आया?
- क्या शौचालय इस्तेमाल करने के महत्व को दूसरों को भी बताना चाहिए?

मुख्य संदेश

- स्वच्छ पानी के इस्तेमाल से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
- शौच से जुड़ी जानकारी का प्रचार–प्रसार करना जरूरी है।

3

साबुन से हाथ धोना

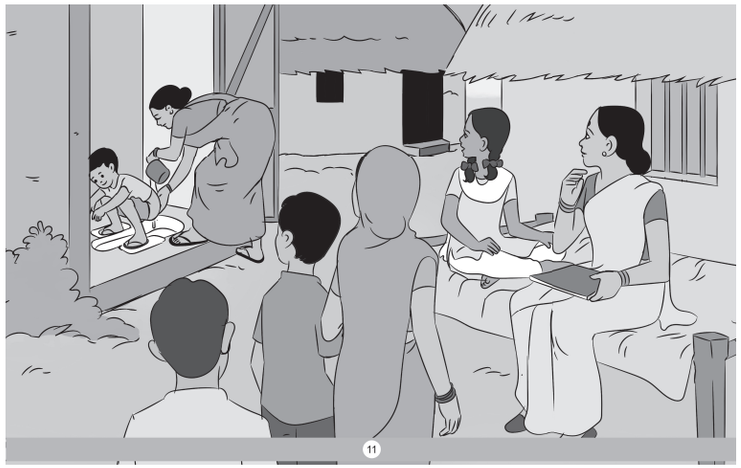

कोमल का छोटा भाई किशन, उम्र 3 साल शौचालय में शौच कर मां को साफ करने के लिए बुलाता है।

बिट्टू – अम्मा कर लिया, धुला दो, अम्मा कर लिया, धुला दो।

कोमल की मां – अरे आई बाबा, चिल्ला काहे रहे हो?

कोमल की मां बिट्टू का शौच साफ कराने चली जाती है और शौच साफ कर सिर्फ पानी से हाथ धोकर वापस आकर मैम से कुछ खाने के लिए पूछती है। मैम कोमल की मां को साबुन से हाथ न धोने के लिए टोकती हैं।

टीचर जी – कोमल की मां आपने यह क्या किया?

कोमल की मां – का हुआ मैम?

टीचर जी – मैंने देखा कि आपने बच्चे को शौच कराने के बाद अपने हाथों को साबुन से नहीं धोया।

कोमल की मां – मैम, मैंने अपने हाथ को पानी से अच्छी तरह धो लिया, देखिए तो मेरे हाथ बिल्कुल साफ हैं।

टीचर जी – बहन, साफ दिखने वाले हाथों में भी दस्त तथा अन्य बीमारी फैलाने वाले कीटाणु हो सकते हैं, इसलिए शौच के बाद हमेशा साबुन और पानी से अच्छी तरह हाथ धोना बहुत जरुरी है।

कोमल की मां – (*चौंककर*) अरे बाप रे, ऐसा भी है का? मैं अभी साबुन से हाथ धोकर आती हूं।

कोमल की मां अपने हाथ को साबुन और पानी से धोकर आती है।

चर्चा के बिन्दु

- अपने हाथों को साफ कैसे करना चाहिए?
- दस्त तथा अन्य बीमारी फैलाने वाले कीटाणु कहां पनपते हैं?

मुख्य संदेश

- शौच करने और बच्चे का मल साफ करने के बाद हाथों को साबुन से ही धोना चाहिए।

टीचर जी कोमल और बल्लू के सभी घरवालों को साबुन से हाथ धोने के बारे में जानकारी देती हैं।

टीचर जी – मुझे खुशी है कि आप सभी ने बीमारियों से बचने के लिए शौचालय का इस्तेमाल शुरु कर दिया और साथ ही स्वच्छ पानी का भी उपयोग करने लगे हैं, लेकिन इसके बावजूद गंदे हाथों से भी हम तक बीमारी पहुंच सकती हैं, इसलिए अपने हाथों को साफ रखना बहुत जरुरी है।

कोमल – यानि गंदे रहेंगे हाथ, तो बीमारी रहेगी हमारे साथ!

टीचर जी – बिल्कुल ठीक कहा कोमल तुमने। गंदे हाथ बीमारी का घर है।

बल्लू – मैम आप हमें बताइए न कि हमें अपने हाथ कब–कब धोने चाहिए, जिससे हम बीमार न पड़ें?

टीचर – अगर बीमारी से दूर रहना है तो हमेशा अपने हाथ साबुन से धोने चाहिए वो भी:

- खाना बनाने तथा परोसने से पहले
- कुछ भी खाने और बच्चे को खिलाने से पहले
- शौच करने, बच्चे का मल साफ करने के बाद
- जानवरों को छूने, गोबर काढने या उसके रखरखाव के बाद
- किसी भी गंदी चीज़ को छूने के बाद

कोमल – मैम क्या ये सब करने पर हम बीमार नहीं पड़ेंगे?

टीचर – हां, ये सब करने से हम बीमार नहीं पड़ेंगे और सदा स्वस्थ रहेंगे, लेकिन इसके अलावा एक बात और.....।

एक बात और सुनकर घर के सभी लोग चौंक पड़ते हैं।

चर्चा के बिन्दु

- बीमारियों से कैसे बचा जा सकता है?
- हाथों को कब–कब धोना चाहिए?

मुख्य संदेश

- साफ दिखने वाले हाथों में भी दस्त तथा अन्य बीमारी फैलाने वाले कीटाणु हो सकते हैं, इसलिए हमेशा हाथों को साफ करने के लिए साबुन का उपयोग करें।
- नल के पास या हाथ धोने की जगह पर साबुन जरूर रखें।

टीचर जी सभी घरवालों को राय देते हुए।

टीचर जी – अब आप लोगों को स्वच्छता से जुड़ी सभी जानकारियां मिल गई हैं, इसलिए आपको भी एक जिम्मेदारी का काम सौंपती हूं।

कोमल – कौन सी जिम्मेदारी मैम?

टीचर – कोमल तुम सभी बच्चों को वाटसन कमिटी में हिस्सा जरुर लेना चाहिए।

कोमल – वाटसन कमिटी?

टीचर जी – हां वाटसन कमिटी, जहां तुम सब बच्चे हिस्सा लेकर स्कूल के दुसरे बच्चों तक जानकारी पहुंचा सकते हो, ताकि समाज का हर परिवार स्वस्थ बन सके और साथ ही कमली तुम लोग भी वाटर यूज़र कमिटी से जुड़ सकते हो।

कोमल की मां – मैम, हम जरुर वाटर यूज़र कमिटी से जुड़ेंगे और सब तक जानकारी पहुंचाएंगे एवं सभी को जागरूक करेंगे।

टीचर जी – हममममममम, शाबाश।

चर्चा के बिन्दु

- वाटसन कमिटी क्या है?
- क्या आप वॉटर यूज़र कमिटी के बारे में जानते हैं?

मुख्य संदेश

- वाटसन कमिटी की मदद से समाज के अन्य लोगों को भी जानकारी पहुंचाई जा सकती है।

water for people
INDIA

ONE DROP